International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No. 3 Jan-Feb 2024

डॉ. भीमराव अंबेडकर का जीवन परिचय

डॉ. देवेन्द्र कुमार बघेल
पीएच.डी., (शिक्षाशास्त्र एवम इतिहास), असिस्टेंट प्रोफेसर,
अशोक (पीजी) कॉलेज, गंज मुरादाबाद, उन्नाव, (उत्तर प्रदेश)
Corresponding Author – डॉ. देवेन्द्र कुमार बघेल
DOI- 10.5281/zenodo.10973314

प्रस्तावना:

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का जीवन बड़ी कठिनाई में बीता था। उन्होंने बचपन से ही श्रमिक समस्याओं की ओर ध्यान से देखा तथा श्रमिकों के नजदीकी भी रहे। उन्होंने कहा कि भारतीय श्रमिकों के दो शत्रु हैं - एक ब्राह्मणवाद और दूसरा पूंजीवाद। भारतीय श्रमिकों को जाति भेद का भी सामना करना पड़ता है और दूसरी और पूंजीपतियों का। डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने श्रमिकों के लिए स्वतंत्र श्रमिक दल की स्थापना की तथा उनको मतदान का अधिकार की वकालत, रोजगार दफ्तरों की स्थापना, बीमा, श्रमिक विद्यालय की स्थापना, श्रमिक आवासों की स्थापना, कार्यरत महिलाओं के लिए प्रसूति अवकाश दिलाने आदि के लिए संघर्ष किया तथा विभिन्न प्रकार के श्रमिक संगठनों की स्थापना से श्रमिकों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक भी किया, जिससे कि श्रमिकों को अपने संगठन बनाने, श्रमिकों पर डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का प्रभाव पड़ा। उन्हें अपने पारिश्रमिक, बीमा, सुरक्षा, आकस्मिक अवकाश, प्रस्तुति अवकाश आदि का ज्ञान हुआ। वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुए। अपनी दशा सुधारने के लिए संगठित हुए और अपनी प्रगति पर अग्रसर हुए।

भारत एक आदर्श राष्ट्र रहा है। विश्व का गुरु होने का गौरव प्राप्त है। कुछ बुराइयां भारत में चली आ रही है। उनके निस्तारण हेतु समय-समय पर आंदोलन होते रहे हैं। श्रमिक वर्ग की समस्याओं पर भी निरंतर सुधार हो रहा है। बंधुआ मजदूर, बाल श्रमिक, महिला श्रमिकों की दशा सुधार हेतु कानून बनाए जाते रहे हैं और उनका समय के अनुसार आधुनिकीकरण हो रहा है। आज भारत स्वतंत्र है और प्रत्येक भारतवासी के स्वतंत्रता के अधिकार सुरक्षित है तथा कितनी ही बुराइयां भारतीय समाज में व्याप्त है और उनका निरंतर निदान हो रहा है। भारत का प्रत्येक नागरिक बड़े ही गर्व से कहता है "मेरा भारत महान"। चाहे उसकी व्यक्तिगत समस्या ही बड़ी हो या सामूहिक समस्या। क्योंकि इन समस्याओं के सुधार पर हमारे राष्ट्रीय नेताओं द्वारा समय-समय पर भारतीय संसद में बहस होती है और भारतीय कानून बनाए जाते हैं । भारतीय संविधान प्रत्येक नागरिक के गरिमा व स्वतंत्रता की रक्षा करता है। भारतीय संविधान के समकक्ष विश्व में अन्य कोई संविधान नहीं है, जो अपने नागरिकों को भारतीय नागरिक के समान स्वतंत्रता व सम्मान प्रदान करता हो।

प्रारंभिक जीवन:

बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का जन्म प्रदेश के औद्योगिक जिले इंदौर के ग्राम महू जहां महार नाम की अनुसूचित जाति के लोग बहुल संख्या में रहते थे, 14 अप्रैल 1891 को हुआ था। महार जाति वीरता के लिए शुभेच्छा थी। इस जाति के लोग बहादुर, निर्भीक, प्रतिभाशाली, साहसी और सक्षम व्यक्तित्व के धनी थे। डॉ आंबेडकर के दादा मार्को की सकपाल अवकाश प्राप्त सैनिक थे। मार्को जी सकपाल के पुत्र राम जी सतपाल और एक पुत्री मीरा थी। रामजी सकपाल और उनकी पत्नी भीमाबाई, जो धार्मिक प्रवृत्ति की थी, उन्होंने भीमराव जैसा पुत्र जन्मा था। दोनों के नाम को मिलाकर बालक का नाम भीमराव रामजी रखा गया।

डॉ अंबेडकर की माता भीमाबाई मुंबई राज्य के थाना जिले के मुरबाड गांव की थी, उनका परिवार धनी व धार्मिक था। उनके परिवार में सभी कबीरपंथी थे। माता

भीमाबाई सभी तरह के साधन संपन्न धार्मिक अचार-विचार वाले परिवार की गंभीर स्वभाव वाली समझदार महिला थी। उनकी ननद मीराबाई पंगु थी। वह इनका विशेष ध्यान रखती थी। उन्होंने पुत्र भीम में अच्छे संस्कार डाले थे। उस समय महार लोग गांव के बाहर प्राय सभी बस्तियों में रहते थे और उनकी बस्तियां महारवाडा कहलाती थी। ईस्ट इंडिया कंपनी में महारों को सेना में भर्ती किया गया। सेना के नियम के अनुरूप सरकारी सेना में जो लोग काम करते थे, उनके बच्चों को शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती थी। सेना अनिवार्य शिक्षा के नियम से बहुत से महान परिवार शिक्षित हो गए। अंबेडकर के पिता राम जी सकपाल ब्रिटिश फौज में दूसरी ग्रेनेडियर रेजीमेंट में सूबेदार मेजर थे। उनको यह रैंक मिलिट्री स्कूल में हेड मास्टर होने की वजह से मिली थी। वह मराठी, अंग्रेजी, गणित में अच्छा खासा अधिकार अनुभव रखते थे।

चौदह संतानों में केवल पांच संतान राम जी की जीवित थी। तीन पुत्र और दो पुत्री में सबसे बड़े बलराम उनसे छोटे आनंद राव फिर मंजुला और तुलसी दो बहने व सबसे छोटे भीम थे। राम जी सकपाल जब डापोजी से सातारा आए तो भीम को किसी स्कूल में दाखिला कराना चाहते थे। अछूत समाज के होने के कारण उन्हें दाखिला नहीं मिल पाता था। मजबूर होकर राम जी एक सैनिक अधिकारी के पास गए और यह प्रार्थना की कि उन्होंने जीवन भर सरकार की सेवा की और उनके बच्चों को कहीं दाखिला नहीं मिला तो यह अन्याय होगा। अंत में भीम को कैंप में 1896 में प्रवेश मिल गया और भीम एवं आनंद राव साथ-साथ स्कूल जाते थे। मां की मृत्यु के बाद जब सौतेली मां आई तो भीम को वह बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी।

सभी अस्पृश्य अछूत बच्चे अपने साथ टाट का टुकड़ा रखते थे ताकि सवर्ण बच्चे उन्हें पहचान सके क्योंकि वह अलग टाट पर बैठते थे। यह टाट स्कूल में भी नहीं रखने दिए जाते थे। भीम और अन्य बालकों को कमरे से बाहर बैठना पड़ता था। वह नल की टोटी से स्वयं अपनी भी नहीं पी सकते थे। प्राय: नल की टोटी को चपरासी अथवा अन्य बालक द्वारा न खोले जाने पर भीम प्यासे ही रह जाते थे। भीम का अंबेडकर उपनाम कैसे पड़ा? भीम के जन्म गांव अम्वावदे से जुड़कर अंबाबदेकर हुआ था तथा उनको एक ब्राह्मण अध्यापक पढ़ाया करते थे, उनका पूरा नाम अंबेडकर था। भीम को खाना खाने के अवकाश में काफी दूर जाना पड़ता था। अंबेडकर अध्यापक को यह पसंद नहीं था। वह एक बच्चे की तरह भीम से विशेष प्रेम करते थे। अपने घर से वह नित्य साग रोटी लाते थे और दूर भीम के हाथों पर गिरा देते थे। उस साग रोटी में भीम को प्यार की बड़ी मिठास लगती थी। एक दिन उन्होंने भीम के नाम में अंबेडकर लगा दिया और रजिस्टर में अंबेडकर लिख दिया। स्वावलंबन की भावना से प्रेरित होकर भीम ने सतारा स्टेशन पर कुली का भी काम किया।

भीम बचपन से ही स्वाभिमान और निर्भय विद्यार्थी थे लेकिन उसे हिंदू निरुत्साहित और अपमानित करते थे। भीम और आनंद राव संस्कृत पढ़ना चाहते थे पर संस्कृत के ब्राह्मण अध्यापक ने साफ कह दिया कि वह अछूत लड़कों को संस्कृत नहीं पढ़ाएंगे। मजबूरन दोनों को फारसी भाषा लेनी पड़ी, जो उनकी इच्छा विरुद्ध थी। अंबेडकर ने कहा मुझे संस्कृत भाषा पर अत्यंत अभिमान है और मैं चाहता हूं कि मैं संस्कृत का अच्छा विद्वान बनूं पर ब्राह्मण अध्यापक के संकुचित दृष्टिकोण से मुझे संस्कृत भाषा से वंचित रहना पड़ा। आगे चलकर भीम ने अपने प्रयासों से संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। सन 1707 में भीम ने मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली। उन्हें फारसी भाषा में सबसे अधिक अंक प्राप्त हुए। महार समाज ने हर्ष मना कर भीम का अभिनंदन किया। प्रसिद्ध समाज सुधारक श्री एस. के. बोले को सभा का अध्यक्ष बनाया गया। इस सभा में प्रसिद्ध मराठी लेखक श्री कृष्णा केलुसकर भी उपस्थित थे। उस समय वह सिटी हाई स्कूल के अध्यापक थे। भीम और केलुसकर दोनों स्कूल से छुट्टी होते ही नियम पूर्वक चरना रोड स्थित गार्डन में निश्चित स्थान पर बैठकर पढ़ते थे। भीम को नियम पूर्वक पढ़ते देख केलुसकर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने भीम से परिचय पूछने पर भीम ने साफ-साफ बताया कि वह अछूत बालक है।

यह सुनकर वह आश्चर्य चकित हुए बाद में उन्होंने भीम को अच्छी-अच्छी पुस्तक पढ़ने के लिए देना प्रारंभ किया। उन्होंने अपनी नई पुस्तक "लाइफ ऑफ गौतम बुद्ध" की एक कॉपी भीम को भेंट की। केलुस्कर ने भीम की प्रशंसा की और राम जी सूबेदार से पूछा क्या वह भीम को आगे पढ़ाएंगे। राम जी ने कहा उनकी आर्थिक स्थिति बड़ी खराब है पर वह भीम को उच्च शिक्षा अवश्य दिलाएंगे। श्री केलुस्कर ने भी आश्वासन दिया कि वह उनकी आर्थिक सहायता करेंगे। भीम श्रमिक बस्ती में रहते थे इसलिए वह मजदूरों की

सोचनीय आर्थिक हालातो से भली भांति परिचित हो गए थे। ऐसी स्थिति आ चुकी थी जब राम जी भीम को पढाने में असमर्थ महसूस करने लगे। ₹50 मासिक पेंशन बहुत कम थी। उन्हें स्वयं नौकरी नहीं मिल पाई। आनंद राव को पढ़ाई बंद करनी पड़ी और उसको जी. आई. पी. वर्कशॉप में लगवा दिया, इससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार हुआ। थोड़े समय में आनंद का विवाह कर दिया। अब उन्हें भीम के विवाह की चिंता हुई। ये भीम के लिए योग्य बाद में एक मात्रविहीन कन्या रमाबाई को पसंद किया। उस समय रमाबाई 9 साल की थी और भीम 16 साल के। रमाबाई सुंदर, शांत स्वभाव की लड़की थी। वह अपने मामा के पास रहती थी।

वैवाहिक जीवन और शिक्षा:

उनका विवाह रमाबाई के साथ हुआ। शादी का स्थान बड़ा विचित्र था। रात को मुंबई के भयाकला बाजार के खुले रोड में विवाह की रीति संपन्न हुई। दूल्हा- दुल्हन और संबंधी सभी उपस्थित थे। उसके नीचे गंदे पानी की नालियां बह रही थी। बाजार के पत्थरों से बैंचो का काम लिया गया। विवाह की रस्म सुबह तक चली। जब तक मछुआरी महिलाएं अपनी-अपनी मछलियां बेचने आ पहुंची। इस विचित्र सौहार्दपूर्ण वातावरण में भीम और रमाबाई का विवाह संपन्न हुआ।

अपने पिता की प्रेरणा से भीमराव ने एल्फिस्टन कॉलेज में प्रवेश ले लिया। किसी अछूत विद्यार्थी के लिए महाविद्यालय में पढ़ना एक आश्चर्यजनक अनुभव था। उच्च शिक्षा प्राप्ति का उन्हें यह अद्वितीय अवसर था। उन्होंने पढ़ाई लिखाई को संभाला पर अस्वस्थ होने के कारण एक साल खोना पड़ा। भीमराव ने इंटर परीक्षा पास की। उधर राम जी आर्थिक दृष्टि से कमजोर हो गए। ऐसी स्थिति में श्री केसुलकर महोदय से सहायता लेनी पड़ी। वह भीम को लेकर बड़ौदा के शिक्षा प्रेमी महाराज सयाजीराव गायकवाड़ के पास गए। वहां भीमराव का परिचय दिया। महाराज ने दो-तीन प्रश्न भीमराव से किये। महाराज उनके उत्तर से प्रसन्न हुए और ₹25 माहवार छात्रवृत्ति देना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार केलुस्कर ने उन्हें आगे पढ़ने के लिए सहायता की।

एलफिस्टन कॉलेज और भेदभाव:

कड़ी मेहनत के पश्चात भीमराव ने 1912 में बी.ए. की परीक्षा पास कर ली। सारे आस पड़ोस में खुशी का वातावरण छा गया। सूबेदार जी ने आनंदित होकर ₹5 की मिठाई मंगवाकर बांटी। किसी अछूत परिवार के लिए उस समय बहुत बड़ी उपलब्धि थी। भीम को एलफिस्टन कॉलेज में भी इस अस्पृश्यता का शिकार होना पड़ा। कॉलेज का होटल वाला जो ब्राह्मण था, इन्हें चाय नहीं देता था। स्कूल में पीने का पानी नसीब नहीं था। सवर्ण हिंदू और प्रोफेसर इनसे कतराते थे। एक दिन कॉलेज के अध्यापक ने उनको ब्लैक बोर्ड पर एग्जांपल हल करने के लिए बुला लिया। इससे सवर्ण छात्रों में हलचल मच गई क्योंकि सामान्य जाति के बच्चे टिफिन बॉक्स ब्लैक बोर्ड के पीछे रखते थे। ब्लैक बोर्ड पर पहुंचते ही सवर्ण बच्चों ने टिफिन बॉक्स हटा लिए। इस घटना ने उनके मन मस्तिष्क को झकजोर कर रख दिया। उनके प्रति कोई सहानुभूति व प्रेम नहीं था। फिर भी अंग्रेजी के प्रोफेसर म्युलर और पर्शियन के प्रोफेसर के. बी. इरानी का भीमराव पर सहज प्रेम था। प्रोफेसर म्युलर भीमराव को पहनने के लिए कपड़े और पढ़ने के लिए पुस्तक भी देते थे। प्रोफेसर ईरानी ने भीमराव को अपना कमरा पढ़ने के लिए दे दिया था। दोनों प्रोफेसर भीम की कर्तव्य निष्ठा और अनुशासन से बड़े प्रसन्न थे। उनकी कुशाग्र बुद्धि ने उन अध्यापक को बड़ा प्रभावित किया।

बी ए पास करने के पश्चात भीम के सामने नौकरी का सवाल पैदा हुआ। राम जी चाहते थे कि वह मुंबई में नौकरी ढूंढ ले। अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध कृतज्ञता की भावना से उन्होंने महाराज बड़ौदा को पत्र लिखा। वह बड़ौदा गए, यहां उन्हें राज्य की सेवा में लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त किया। वास्तव में बड़ौदा में भीमराव के निवास तथा भोजन की कोई व्यवस्था नहीं थी। भीमराव को बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ा। जनवरी 1973 में मुश्किल से 15 दिन काम किया था कि उन्हें मुंबई से पिता की हालत चिंताजनक का तार मिला। नौकरी की 8 दिन की तनख्वाह उन्हें मिल पाई। दूसरे दिन जब वह मुंबई पहुंचे तो राम जी मरणोन्मुखी अवस्था में चारपाई पर लेटे थे। सूबेदार जी की आंखें अपने प्रिय पुत्र की ओर मुड़ी और ममतामय हाथ उनकी पीठ पर फेरा। कुछ देर भीम की ओर एकटक देख, फिर सदैव के लिए चिर निद्रा में सो गए । पिता का वियोग उन्हें बहुत दुखद था।

उच्च शिक्षा एवम् विदेशी जीवन:

राम जी की मृत्यु के बाद भीमराव को अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ा। साथ ही उनके हृदय में ज्ञान और विद्यापार्जन का प्रेम और बढ़ गया। भाग्यवस इसी समय एक सुनहरा अवसर हाथ आया। महाराज बड़ौदा ने कुछ

विद्यार्थियों को कोलंबिया विश्वविद्यालय, अमेरिका भेजने का निश्चय किया। महाराज उस समय मुंबई में ही थे। भीम उनसे मिले और सारी गाथा उन्हें कह सुनाई। महाराजा भीम की अंग्रेजी से बड़े प्रसन्न हुए। उन्हें विश्वास हो गया कि वह होनहार युवक है। अन्य तीन विद्यार्थियों के साथ उन्हें भी अमेरिका जाने की छात्रवृत्ति 15 जून 1913 से 14 जून 1916 तक निश्चित हुई। उन्हें तीन देशों में रहने का अवसर मिला। साथ ही बड़ौदा के उप शिक्षा मंत्री के समक्ष इस इकरारनामा पर हस्ताक्षर करने पड़े कि वह अपना समय अमेरिका में विद्याध्ययन में व्यतीत कर लौटकर 10 वर्ष तक बड़ौदा रियासत में नौकरी करेंगे। 21 जुलाई 1913 को भीम ने कोलंबिया विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। भीमराव एक पर्शियन विद्यार्थी नवल मथेना के साथ रहे। मथेना जीवन पर्यंत भीम का मित्र बन रहा। उन्होंने वहां अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, नैतिक दर्शन तथा सहायक विषय लेकर एम ए का अध्ययन प्रारंभ कर दिया।

अमेरिका का जीवन विचित्र एवं गतिशीलता लिए था। वहां अंबेडकर को नए अनुभव हुए। वह विद्यार्थियों के साथ स्वतंत्रता पूर्वक घूम सकते थे। वह समानता के स्तर पर सबके साथ पढ़ लिख सकते थे। सबके साथ भोजन नियमित रूप से एक ही टेबल पर मिलता था। पाश्चात्य समाज का उन्हें ऐसा जीवन मिला, जिसने उनके मानसिक क्षितिज को विस्तृत बना दिया। वहां नए जीवन के मूल्य निहित थे। भारतीय समाज की घुटन, पीड़ा, छुआछूत तथा आडंबर वहां नहीं था। ऐसे स्वतंत्र वातावरण में कुछ दिन रहने के पश्चात भीमराव ने अपने पिता के मित्र को पत्र लिखा जिसमें उन्होंने दलित समाज के उत्थान पर बल दिया। उन्होंने लिखा "माता-पिता बच्चों को जन्म देते हैं कर्म नहीं, वे बच्चे के भाग्य को बदल सकते हैं। शिक्षा समस्त उत्थान का मूलमंत्र है ।इसीलिए आपका मिशन होना चाहिए कि आप शिक्षा के विचार का अपने सगे संबंधियों में प्रचार करें।"

कोलंबिया यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के अध्यक्ष प्रोफेसर एडविन ए सेलिग्न भीम को नियत समय पर आते पढ़ते देख बहुत प्रभावित हुए। प्रोफेसर सेलिग्न अपने विद्यार्थियों को बहुत ध्यान से पढ़ाते थे तथा अच्छी तरह से समझाते और अपने विद्यार्थियों से बहुत प्रेम करते थे। भीमराव के जीवन पर उनका गहरा प्रभाव पड़ा। प्रोफेसर सेलिग्न लाला लाजपत राय के मित्र थे। उन्होंने भीमराव की तारीफ करते हुए कहा " भीमराव न केवल भारतीय विद्यार्थियों बल्कि अमेरिकन विद्यार्थियों से भी अधिक श्रेष्ठ है।" लाला लाजपत राय ने "इंडिया होम रूल लीग ऑफ अमेरिका", जिसकी उन्होंने वहां स्थापना की थी, मे भीम को काम करने को कहा।

दो साल की अवधि पश्चात सफलता ने उनका आलिंगन किया। सन 1915 में अपने "एंसिएंट इंडियन कॉमर्स" नामक प्रबंध पर कोलंबिया से एम ए की डिग्री प्राप्त की। भीमराव ने सन 1916 में डॉक्टर गोल्डन बीजक के सेमिनार में अपना शोध पूर्ण लेख " कास्ट्स इन इंडिया-देयर मेकैनिज्म जेनेसिस एंड डेवलपमेंट" पढ़ा। साथ ही उन्होंने "नेशनल डिविडेंड आफ इंडिया- ए हिस्टोरिक और लैटिकल स्टडी" पर एक प्रबंध लिखा, जिसे कोलंबिया यूनिवर्सिटी ने जून 1916 में पीएच- डी की डिग्री के लिए स्वीकृत किया। विधिवत डिग्री प्राप्त करने के लिए आवश्यक था कि थीसिस की कुछ प्रतियां टाइप या प्रकाशित करवाकर प्रस्तुत करें, पर भीम के पास इतना पैसा नहीं था। 8 साल बाद उसने इस निबंध को मै. पी. एस. किंगर एंड सन ब्रदर्स के नए शीर्षक "द एवोल्यूशन ऑफ़ प्रोविंशियल फाइनेंस इन ब्रिटिश इंडिया" के अंतर्गत प्रकाशित किया। इस प्रकाशित ग्रंथ की कुछ प्रतियां यूनिवर्सिटी को भेंट की। उन्हें 1924 में विधिवत पीएच-डीo की उपाधि प्रदान की गई। अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों एवं प्रोफेसर में इस निबंध की बड़ी प्रशंसा हुई। वक्ताओं ने नवोदित पीएच-डीo प्राप्त अंबेडकर की भूरि भूरि प्रशंसा की।

भीमराव पर अमेरिका की दो बातों का विशिष्ट प्रभाव रहा। प्रथम वहां के संविधान से विशेष कर उसमें 14वें अनुच्छेद, जो नीग्रो जाति के लोगों की स्वतंत्रता की घोषणा करता है। दूसरे वाशिंगटन के जीवन से ,जिनका 1915 में देहांत हुआ, वह नीग्रो जाति के सुधारक एवं शिक्षक थे। कोलंबिया से शिक्षा पूर्ण कर भीम लंदन गए। वह चाहते थे कि लंदन जैसे अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा केंद्र में ज्ञान प्राप्त किया जाए एवं बैरिस्टर बन जाए। पर धन की कमी और छात्रवृत्ति की समाप्ति के कारण प्रोफेसर सेलिग्न का एक सिफारसी पत्र महाराज बड़ौदा को भेजा कि उनकी छात्रवृत्ति बढ़ा दी जाए। महाराजा ने 1 वर्ष के लिए छात्रवृत्ति बढ़ा दी। वह जून 1916 में लंदन रवाना हो गए। लंदन स्कूल आफ इकोनॉमिक्स एंड पॉलीटिकल साइंस में प्रवेश लिया और प्रोफेसर ने उन्हें डीएससी डिग्री की तैयारी की स्वीकृति दे दी। वह एमए पीएचडी थे इसलिए उन्हें एमएससी अर्थशास्त्र करने की आज्ञा भी मिल गई। डॉ

अंबेडकर ज्ञान साधना में लग गए। उन्होंने इंडिया लंदन स्कूल और ब्रिटिश म्यूजियम के विशाल पुस्तकालय का गहन अध्ययन किया। दुर्भाग्य बस इनकी छात्रवृत्ति की समाप्ति हो गई उन्होंने महाराज को छात्रवृत्ति बढ़ाने का पत्र भेजा जो संभव नहीं हुआ। वह मन ही मन दुखी हो गए।

भारत वापसी एवं समाज सुधार:

उन्होंने संकल्प किया कि भारत आकर पैसा कमा कर एमएससी डीएससी तक की डिग्रियां प्राप्त करेंगे। प्रोफेसर एडविंग के नाम की दयालु सिफारिश पर यूनिवर्सिटी ने उन्हें अक्टूबर 1917 से 4 वर्ष की और विद्या अध्ययन की आज्ञा दे दी। लंदन छोड़ने में डॉक्टर अंबेडकर को खुशी न थी। बिना कोई डिग्री प्राप्त किए आना दुख की बात थी। उन्होंने अपनी सारी पुस्तक "थॉमस कुक एंड संस" जहाज से भेज दी। उस समय प्रथम विश्व युद्ध चल रहा था तथा समुद्री यात्रा करना खतरनाक था। एक दिन परिवारी जनों ने अखबार में पढ़ा कि लंदन से आने वाला जहाज डुबो दिया गया। सभी परिवारीजन शोक मगन हो गए। बाद में पता लगा कि वह "केसर ए हिंद" जहाज में आ रहे थे, जो सुरक्षित था। उनकी बहुमूल्य पुस्तकें, जो उन्हें बहुत प्रिय थी, समुद्र में डूब गई। अगस्त 1917 को कोलंबिया से मुंबई पहुंच कर परिवार में वापस आ गए। शीघ्र ही एक सभा का आवेदन किया गया, जिसमें उनकी शिक्षा की उपलब्धियां पर उनका अभिनंदन किया गया। मुंबई के चीफ प्रेसिडेंट राव बहादुर चुन्नीलाल शीतलवाड़ ने सभा की अध्यक्षता की। महाराज बड़ौदा द्वारा मिलिट्री सेक्रेटरी के पद पर बाबा साहब को नियुक्त किया गया परंतु दुर्व्यवहार के कारण पद छोड़ दिया।

डॉ आंबेडकर ने अपना कुछ बचा हुआ पैसा कोल्हापुर के शाहू महाराज से एवम कुछ आर्थिक सहायता प्राप्त कर अपने मित्र नवल मेथेना से ₹5000 ऋण लेकर लंदन चले गए। इस बीच बड़ौदा के अधिकारी रियासत की आर्थिक स्थिति नियंत्रित करने का बहाना लेकर डॉ आंबेडकर के पीछे पड़ गए। डॉ आंबेडकर के लिए यह एक नई मुसीबत थी। लेकिन जब महाराज को इन हरकतों का पता लगा तो उन्होंने इसे खूब लताड़ा और निर्देश दिया के वह कभी डॉक्टर अंबेडकर से इस संबंध में कोई पत्र व्यवहार न करे। महाराज कोल्हापुर उन दिनों समाज उत्थान के कार्य हेतु चर्चित थे। महाराज के सहयोग से डॉ अंबेडकर ने 1920 में "मूकनायक" मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया। पत्रिका के प्रचार प्रसार से अछूतों में एक विश्वास सहित आशा की नई किरण जाग उठी। डॉ अंबेडकर को अछूतों का नायक माना जाने लगा। 1920 में छत्रपति शाहूजी महाराज की अध्यक्षता में नागपुर में "अखिल भारतीय बहिष्कृत हितकारिणी सभा" हुई। बैठक में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अछूतों की उन्नति में बाधक किसी भी व्यक्ति या संस्था को चाहे वह अछूत समाज का ही क्यों न हो तीव्र विरोध करना चाहिए। अछूतों को स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए।

बेंजामिन फ्रैंकलिन, जिन्होंने एक बहुत ही निर्धन के रूप में जीवन प्रारंभ किया और जो एक महान व्यक्ति बना, कहा था कि सफलता दो बातों पर निर्भर करती है "परिश्रम और मितव्ययिता" । कुछ समय पश्चात डॉक्टर अंबेडकर ने अपना शोध पूर्ण किया। पूर्ण हो जाने पर उन्होंने "प्रोविंशियल सेंट्रलाइजेशन ऑफ़ इंपिरियल फाइनेंस इन ब्रिटिश इंडिया" के नाम प्रकाशित किया। इस कार्य के बाद उन्हें जून 1921 में मास्टर ऑफ साइंस की डिग्री प्रदान की गई। 1922 में उन्होंने अपनी थीसिस, जो बहुत प्रसिद्ध हुई, लंदन यूनिवर्सिटी से पीएच-डी० प्राप्त की। उसके बाद "बार एट लॉ" की परीक्षा के लिए कानून के अध्ययन में लग गए। कानून की प्रथम परीक्षा में वे पहली बार सफलता हासिल नहीं कर पाए क्योंकि वह अपने शोध कार्य में संलग्न थे। मई 1922 में लंदन वापस आ गए । उसके बाद वह बोर्न यूनिवर्सिटी में अध्ययन के लिए पुन: चले गए। वहां उन्होंने जर्मन और फ्रेंच भाषाओं का अध्ययन किया। मार्च 1923 को उन्हें उनके प्रोफेसर एडविन केरन ने लंदन वापस बुला लिया क्योंकि उनके प्रशंसकों ने, जो ब्रिटिश साम्राज्यवादी विचारधारा में रुचि रखते थे, थीसिस का सारांश अपने बिना कुछ समय के पश्चात पुनः पेश करने को लिखा।

डॉ अंबेडकर ने प्रोफेसर केरन की सलाह के अनुसार अपने प्रबंध में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किए। आर्थिक संकट के कारण 14 अप्रैल 1923 को मुंबई वापस आ गए। कुछ दिनों बाद वे अपनी थीसिस "द प्रॉब्लम ऑफ़ द रुपी" को मुंबई से पुन: लंदन यूनिवर्सिटी को भेजा, जो स्वीकार किया गया व उन्हें डीएससी की डिग्री प्रदान की गई, जिससे वह अत्यंत प्रसन्न थे। लंदन के पी. एस. किंग एंड संस ने दिसंबर 1923 में प्रकाशित किया, जिन्हें उन्होंने अपने सम्मानित पिता को समर्पित किया। डॉ आंबेडकर शिक्षा में निपुण हो चुके थे। उन्होंने कोलंबिया यूनिवर्सिटी से

एमए पीएचडी लंदन यूनिवर्सिटी से, एमएससी और ग्रेजुएशन से बार एट लॉ डिग्री प्राप्त की। अब वह दलितों की आर्थिक सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं पर अधिकार पूर्वक विचार कर उनका मार्गदर्शन करने लगे। वह वकालत द्वारा अपने परिवार का भरण पोषण व समाज सुधार करने लगे। उन्होंने डिग्री प्राप्त कर 1923 में वकालत शुरू की। डॉ आंबेडकर सरकारी नौकरी में कार्य करने के इच्छुक नहीं थे। वह ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहते थे जिससे दलित उत्थान में बाधा उत्पन्न हो। परिवार की आर्थिक संकट को देखते हुए डॉक्टर भीमराव ने "वोटली बॉयज अकाउंटेंसी ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट" में अंशकालिक लेक्चरर के पद पर जून 1925 में कार्य किया। वह 1928 मार्च तक इस पद पर रहे। वह मार्केटिंग लॉ (व्यापारिक कानून) पढ़ाते थे। उनकी वकालत अच्छी नहीं थी। उनका अधिकांश समय समाज सुधार में ही व्यतीत होता था, जबकि वकालत के लिए कोर्ट में जमकर बैठने पर ही वकालत चल सकती थी।

उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य अछूतोद्धार था। डॉक्टर अंबेडकर ने अछूतोधार आंदोलन 20 जुलाई 1924 को मुंबई में "बहिष्कृत हितकारिणी सभा" की स्थापना की। उस सभा की स्थापना फरवरी 1920 में पांडुरंग नंदराम भटकर ने प्रारंभ की, जो धनाभाव के कारण बंद हो गई थी। दलितों के लिए डॉक्टर अंबेडकर ने नारा दिया "आत्म सहायता सबसे उत्तम सहायता" है। 1926 में डॉक्टर अंबेडकर ने "हिल्टन यंग कमीशन", जो कि इंडिया करेंसी पर रॉयल कमीशन था, के समक्ष गवाही दी। इसी वर्ष डॉ आंबेडकर मुंबई प्रेसिडेंसी की विधान परिषद के सदस्य मनोनीत किए गए। 1927 में डॉ अंबेडकर ने साइमन कमीशन से अछूतों के अधिकारों की वकालत की। 1930 में डॉक्टर अंबेडकर ने दलितों को मंदिरों में प्रवेश को लेकर आंदोलन किया। इस आंदोलन के तहत उन्होंने नासिक स्थित कालाराम मंदिर में प्रवेश को लेकर आंदोलन किया। 1930 में ही लंदन में गोलमेज सम्मेलन में अछूत वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। 1932 में पूना पैक्ट हुआ। यह पहला ऐतिहासिक समय था जब दलितों को संवैधानिक अधिकारों की प्राप्ति हुई। उन्होंने 1936 में "इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी" बनाकर श्रमिकों के अधिकारों के लिए आंदोलन करके काम के घंटे में कमी सवैतनिक छुट्टी, शिशु सदनों व श्रमिकों के लिए कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम पास कराया था। 1937 में डॉक्टर अंबेडकर मुंबई विधानसभा में सदस्य निर्वाचित हुए। उन्होंने "हेरेडिटरी ऑफिस एक्ट" 1874 में अमेंडमेंट बिल पेश किया तथा वतनदारी प्रथा को समाप्त कराया। इस प्रथा के तहत पूरे परिवार को बेगार करनी पड़ती थी। 1942 में डॉ अंबेडकर ने दलित वर्ग के राजनीतिक भागीदारी के लिए "ऑल इंडिया शेड्यूल कास्ट फेडरेशन" की स्थापना की। डॉ अंबेडकर ने 1945 में "पीपल्स एज्युकेशन सोसायटी" की स्थापना की। 1946 में सिद्धार्थ कॉलेज का उद्घाटन किया तथा गवर्नर की कार्यवाही समिति की सदस्यता ग्रहण की। 1946 में ही "हू वर शुद्रास" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। 1947 में ड्राफ्टिंग कमेटी में नियुक्त हुए। स्वतंत्रता के पश्चात मंत्रिमंडल में वित्त मंत्री के रूप में कार्यभार संभाला।

महिलाओं के अधिकारों के लिए डॉ अंबेडकर ने एक समान विधि संहिता बनाना चाहते थे परंतु सारे देश के लोगों ने उनका विरोध किया। उन्होंने व्यथित होकर कानून मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया। 15 अप्रैल 1948 को उन्होंने शारदा कबीर से विवाह कर लिया। जून 1950 में औरंगाबाद में मिलिंद महाविद्यालय की स्थापना की। डॉ अंबेडकर ने श्रीलंका की राजधानी कोलंबो में 19 दिसंबर 1950 में आए विश्व बौद्ध सम्मेलन में भाग लिया। उन्होंने "बुद्ध और उसके धर्म का भविष्य" नामक महत्वपूर्ण लेख 1950 में लिखा था। अतः 14 अक्टूबर 1956 में नागपुर में एक ऐतिहासिक बौद्ध सम्मेलन में बौद्ध धर्म की दीक्षा लाखों लोगों के साथ ग्रहण की। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि बौद्ध धर्म समता, स्वतंत्रता एवं ब्रह्म भाग्यवाद के मायाजाल से दूर और मुक्त है। जीवन की शुद्धता, नैतिकता और कर्मयोग की वकालत करता है। डॉक्टर अंबेडकर का 6 दिसंबर 1956 को निधन हो गया।

निष्कर्ष:

डॉ आंबेडकर को बचपन से ही अपमानित होना पड़ा था। उस अपमान को उन्होंने मिटाने का संकल्प कर लिया। विदेश में शिक्षा ग्रहण करने के दौरान वह पत्रों से अपने समाज की स्थिति की जानकारी रखते थे और उनका समाधान भी भेजते थे। विदेश से लौटने के बाद वह खुलकर भारतीय वर्ण व्यवस्था के खिलाफ मैदान में कूद पड़े। उन्होंने समाचार पत्रों एवं जन आंदोलनो के द्वारा मानवाधिकारों एवं समान अधिकारों के लिए जीवन भर संघर्ष किया। उन्होंने भारतीय मानव अधिकारों के विकास एवं संरक्षण के लिए नई दिशा प्रदान की।

संदर्भ ग्रंथ:

१. डॉ डी आर जाटव, डॉ आंबेडकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व, समता साहित्य सदन, जयपुर, 1993 पृष्ठ संख्या 5.

२. खिमशेरा, डॉक्टर ज्ञानचंद, डॉक्टर अंबेडकर का आर्थिक चिंतन, मध्य प्रदेश हिंदी अकादमी, भोपाल 1995, पृष्ठ संख्या 7.

३. डॉ आंबेडकर लाइफ एंड मिशन, दूसरा संस्करण, धनंजय कौर, पृष्ठ संख्या 4.

४. सापल बीआर ,बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर प्रीतम प्रकाशन, जालंधर ,2003, पृष्ठ संख्या 5.

५. शांति स्वरूप बौद्ध, ऐसे थे हमारे बाबा साहब, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ संख्या 32.

६. पयेरिया राजेंद्र अंबेडकर, चित्रमई जीवनी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष 1996, पृष्ठ संख्या 11.

७. साभार, डॉक्टर अंबेडकर, जीवन और दर्शन

८. पी ई एस मिलिंद महाविद्यालय औरंगाबाद स्मारिका, दिसंबर 1963, पृष्ठ संख्या 15.

९. मून बसंत, डॉ बाबासाहेब अंबेडकर, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, वर्ष 1991, पृष्ठ संख्या 13.

१०. रंतू नानक चंद्र, डॉक्टर अंबेडकर, कुछ अनुछुए प्रसंग, पृष्ठ संख्या 25.

११. बौद्ध शिल्प्रिय, पूना पैक्ट- क्यों क्या और किसके लिए, पृष्ठ संख्या 54.

१२. पत्रिका उत्तर प्रदेश, संदेश, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर विशेषांक, 1991, पृष्ठ संख्या 36 ।।।